International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2018; Page No. 27-30

भगत सिंह विभिन्न विषयों पर विचार व समझ

डॉ. राकेश कुमार
प्रवकता इतिहास, रा. व. मा. वि. धनूर, सिरसा, हरियाणा, भारत।

सारांश
भगत सिंह ने भारत मे क्रान्ति किस प्रकार लेकर आई जा सकती है नवयुवक, धर्म और व्यक्ति, सांमप्रदायिक दंगें और इनका इलाज इस शोधपत्र में इन विषयों पर भगत सिंह के विचारो के बारे में लिखा गया है।

मूल शब्दः नवयुवक, धर्म, व्यक्ति, सांमप्रदायिक, दंगें, क्रांति

प्रस्तावना

जीवन परिचय

भगत सिंह का जन्म शनिवार 28 सितम्बर 1907 प्रातः 9:00 बजे बंगा गांव जिला लायलपुर में हुआ। दादा सरदार अर्जुन सिंह इनके तीन बेटे थे सरदार किशन सिंह, सरदार अजीत सिंह और सरदार स्वर्ण सिंह, पिता का नाम सरदार किशन सिंह व माता का नाम विद्यावती था। भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह पंजाब के एक गांव खटकड़कला, जिला जालंधर के निवासी थे। बीसवीं सदी के आरम्भिक वर्षों में जब अंग्रेजी सरकार ने लायलपुर के इलाके में नई नहर खुदवा कर उसे आबाद करने के लिए जालंधर, होशियारपुर आदि के निवासियों को वहां जाकर बसने के लिए जमींने दी तो सरदार अर्जुन सिंह भी बंगा जिला लायलपुर में जा बसे[1]।

प्रभाव व विचार

1 उनके जीवन पर गदर पार्टी की विचारधारा और कार्यक्रम
2 महान अक्तूबर क्रान्ति[2]
3 13 अप्रैल, 1919 (वैसाखी के दिन) अमृतसर के जलियाँवाला बाग हत्याकांड
4 करतार सिंह की फांसी
5 गांधीजी का आंदोलन (1920) असहयोग
6 डी0ए0वी0 कॉलेज लाहौर के आचार्य श्री जुगल किशोर विलायत
7 द्वारकदास पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री राजाराम शास्त्री द्वारा दी गई पुस्तक ''अराजकतावादी और अन्य निबन्ध पुस्तक का अध्याय ''हिसां का मनोविज्ञान''

इसमें फ्रांस के अराजकतावादी नवयुवक बेलां का ब्यान बहरों को सुनाने के लिए ऊंची आवाज की आवश्यकता होती है। इन घटनाओं का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

क्रांति व युवक

भगत सिंह ने नीचे की अदालत में पूछा गया था कि क्रांति से उन लोगों क्या मतलब है? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था कि क्रांति के लिए खुनी लड़ाइयां अनिवार्य नहीं हैं। न ही उसमें व्यक्तिगत प्रतिहिसां के लिए कोई स्थान है। वह बम और पिस्तौल का सम्प्रदाय नहीं है। क्रांति से हमारा अभिप्राय है। अन्याय पर आधारित मौजूदा समाज–व्यवस्था में आमूल परिवर्तन। क्रांति से हमारा मतलब अन्ततोगत्वा एक ऐसी समाज–व्यवस्था की स्थापना से है जिसमें सर्वहारा वर्ग का अधिपत्य सर्वमान्य होगा। जिसके फलस्वरूप स्थापित होने वाला विश्व–संघ मानवता को पूँजीवाद के बन्धनों से और साम्राज्यवादी युद्ध की तबाही से छुटकारा दिलाने में समर्थ हो सकेगा। क्रांति मानवजाति का जन्मजात अधिकार है जिसका अपहरण नही किया जा सकता। स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है।[4] क्रांति (इंकलाब) का अर्थ अनिवार्य रूप से सशस्त्र आंदोलन नहीं होता। बम और पिस्तौल कभी–2 क्रांति को सफल बनाने के साधन मात्र हो सकते हैं। इसमें भी संदेह नहीं है कि कुछ आंदालनों में बम एवं पिस्तौल एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होते हैं, परंतु केवल इसी कारण से बम और पिस्तौल क्रांति के पर्यायवाची नहीं हो जाते। विद्रोह को क्रांति नहीं कहा जा सकता, यद्यपि हो सकता है कि विद्रोह का अंतिम परिणाम क्रांति हो। एक वाक्य में क्रांति का अर्थ 'प्रगति के लिए परिवर्तन की भावना एवं आंकाक्षा।[5] जनता के लिए जनता का राजनीतिक शक्ति हासिल करना। साम्राज्यवादियों और उनके मददगारो को हटाकर जो कि उसी आर्थिक व्यवस्था के पैरोकार हैं, जिसकी जड़ें शोषण पर आधारित हैं। आगे आना है। हम गोरी बुराई की जगह काली बुराई को लाकर कष्ट नहीं उठाना चाहते।[6]
पिस्तौल और बम इंकलाब नही लाते, बल्कि इंकलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है। और यही चीज थी।[7]

क्रांति सफल बनाने में युवकों का योगदान

भगत सिंह ने अपने लेखक युवक में लिखा है अगर रक्त की भेंट चाहिए तो सिवा युवक के कौन देगा? अगर तुम बलिदान चाहते तो तुम्हें युवक की और देखना पड़ेगा। प्रत्येक जाति के भाग्यविधाता युवक ही तो होते हैं। आज के युवक ही कल के देश के भाग्य निर्माता हैं। वे ही भविष्य के सफलता के बीज हैं।[8] नौजवान बहादुर होते हैं। उदार व भावुक होते हैं। क्योंकि नौजवान भीषण अमानवीय यातनाओं को मुस्कुराते हुए बर्दाश्त कर लेते हैं और बगैर किसी प्रकार की हिचकिचाहट के मौत का सामना करते हैं। क्योंकि मानव प्रेति का सम्पूर्ण इतिहास नौजवान आदमियों तथा औरतों के खून से लिखा है। क्योंकि सुधार हमेशा नौजवानों की शक्ति, साहस, आत्मबलिदान और भावात्मक विश्वास के बल पर ही प्राप्त हुए हैं। ऐसे नौजवान जो भय से परिचित नहीं हैं और जो सोचने के बजाय दिल से कहीं अधिक महसूस करते हैं।

''क्रांति जनता द्वारा, जनता के हित में'' इस कार्य को केवल क्रांतिकारी युवक ही पूरा कर सकेंगे। युवकों के सामने जो काम है, वह काफी कठिन है और उनके साधन बहुत थोड़े हैं। उनके मार्ग में बहुत सी बाधाएं भी आ सकती हैं। लेकिन थोड़े किन्तु निष्ठावान व्यक्तियों की लगन उन पर विजय पा सकती है। युवकों को आगे जाना चाहिए। उनके सामने जो कठिन एवं बाधाओं से भरा हुआ मार्ग है और उन्हें जो मान कार्य सम्पन्न करना है, उसे समझना होगा। उन्हें अपने दिल में यह बात रख लेनी चाहिए कि ''सफलता मात्र एक संयोग है, जबकि बलिदान एक नियम है। नौजवानों को चाहिए कि वे स्वतंत्रतापूर्वक, गंभीरता से, शान्ति और सब्र के साथ सोंचे। उन्हें चाहिए कि वे भारतीय स्वतंत्रता के आदर्श को अपने जीवन के एकमात्र लक्ष्य के रूप में अपनाएं। उन्हें अपने पैरों पर खड़े होना चाहिए। उन्हें अपने आपको बाहरी प्रभावों से दूर रहकर संगठित करना चाहिए। उन्हें चाहिए कि मक्कार तथा बेईमान लोगों के हाथों में न खेलें। जिनके साथ उनकी कोई समानता नहीं है और जो हर नाजुक मौके पर आदर्श पर परित्याग कर देते हैं। उन्हे चाहिए कि संजीदगी और ईमानदारी के साथ ''सेवा, त्याग व बलिदान'' को अनुकरणीय वाक्य के रूप में अपना मार्गदर्शक बनाएं। याद रखिए कि ''राष्ट्रनिर्माण के लिए हजारों अज्ञात स्त्री–पुरूषों के बलिदान की आवश्यकता होती है जो अपने आराम व हितों के मुकाबले तथा अपने एवं अपने प्रियजनों के प्राणों के मुकाबले देश की अधिक चिन्ता करते हैं।[9] नौजवानों को क्रांति का यह संदेश देश के कोने–2 में पहुंचाना है। फैक्टरी कारखानों के क्षेत्रों में, गंदी बस्तियों और गांवों की जर्जर झोपड़ियों में रहने वाले करोड़ों लोगों में इस क्रांति की अलख जगानी है। जिससे आजादी आएगी और तब एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य का शोषण असंभव हो जाएगा।[10]

धर्म और व्यक्ति

''धर्म और हमारा स्वतंत्रता संग्राम'' में भगत सिंह ने धर्म की समस्या के बारे में बताया है कि क्या धर्म घर में रखते हुए भी, लोगों के दिलों में भेदभाव नहीं बढ़ता? क्या उसका देश के पूर्ण स्वतंत्रता हासिल करने तक पहुंचने में कोई असर नहीं पड़ता? धर्म बच्चे को हमेशा के लिए कमजोर बनाता है। उसके दिल की शाश्वत और उसके आत्मविश्वास की भावना को नष्ट कर देता है। धर्म (आजादी) के रास्ते में एक रोड़ा है। मसलन हम चाहते हैं कि सभी लोग एक से हों। उनमें पूजीपतियों के ऊँच–नीच की छूत–अछूत का कोई विभाजन न हो। लेकिन सनातन धर्म इस भेदभाव के पक्ष में है।[11]

असेम्बली बम कांड के केस की अपील के दौरान लाहौर हाई कोर्ट में ब्यान देते हुए कहा था इंकलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज की जाती है,'' और उसके आधार पर उन्होंने यह सूत्र प्रस्तुत किया कि ''आलोचना और स्वतंत्र विचार किसी क्रांतिकारी के दो अपरिहार्य गुण हैं,'' जो आदमी प्रगति के लिए संघर्ष करता है। उसे पुराने विश्वासों की एक–एक बात की आलोचना करनी होगी, उस पर अविश्वास करना होगा और उसे चुनौती देनी होगी। इस प्रचलित विश्वास के एक–एक कोने में झांककर उसे विवेकपूर्ण समझना होगा।'' उन्होंने कहा ''निरा विश्वास और अंधविश्वास खतरनाक है, इससे मस्तिष्क कुण्डित होता है और आदमी प्रति क्रियावादी हो जाता है,''[12]

भगत सिंह स्वीकार करते थे कि 'ईश्वर में कमजोर आदमी को जबर्दस्त आश्वासन और सहारा मिलता है और विश्वास उसकी कठिनाईयों को आसान ही नहीं बल्कि सुखकर भी बना देता है। वे कहते थे,'' अपनी नियती का सामना करने के लिए मुझे किसी नशे की जरूरत नहीं है। उन्होंने ऐलान किया कि ''जो आदमी अपने पाँवों पर खड़े होने की कोशिश करता है और यथार्थवादी हो जाता है, उसे धार्मिक विश्वास को एक तरफ रखकर, जिन–जिन मुसीबतों और दुखों में परिस्थितियों ने उसे डाल दिया है। उनका एक मर्द की तरह बहादुरी के साथ सामना करना होगा।'' 1926 के अंत तक मुझे इस बात का यकीन हो गया था कि सृष्टि का निर्माण व्यवस्थापन और नियंत्रण करने वाली किसी सर्वशक्तिमान परम सत्ता के अस्तित्व का सिद्धांत एकदम निराधार है।[13]

साम्प्रदायिक दंगे और इनका इलाज

भगत सिंह ने अपने लेख साम्प्रदायिक दंगे और इनका इलाज में लिखा था। '' साम्प्रदायिक दंगों की जड़ खोंजे तो हमें इसका कारण आर्थिक ही जान पड़ता है। असहयोग के दिनों में नेताओं व पत्रकारों ने ढेरों कुर्बानियां दी उनकी आर्थिक दशा बिगड़ गई थी। असहयोग आंदोलन के धीमा पड़ने पर नेताओं पर अविश्वास सा हो गया जिससे आजकल के बहुत से साम्प्रदायिक नेताओं के धंधे चौपट हो गए। विश्व में जो भी काम होता है, उसकी तह में पेट का सवाल जरूरी होता है। कार्ल मार्क्स के तीन बड़े सिद्धांतों में से यह एक मुख्स सिद्धांत है। इसी सिद्धांत के कारण तबलीग, तनकीम, शुद्धि आदि संगठन शुरू हुए और इसी कारण से आज हमारी ऐसी दुर्दशा हुई।[14]

उन्होंने आगे लिखा है ''सभी दंगों का इलाज यदि हो सकता है तो वह भारत की आर्थिक दशा में सुधार से ही हो सकता है। दरअसल भारत में आम लोगों की आर्थिक दशा इतनी खराब है कि एक व्यक्ति दूसरे को चवन्नी देकर किसी और को अपमानित करवा सकता है। भूख और दुख से आतुर होकर मनुष्य सभी सिद्धांत ताक पर रख देता है। सच है, मरता क्या न करता'' लोगों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग चेतना की जरूरत है। संसार के सभी गरीबों के चाहे वे किसी भी जाति, रंग, धर्म या राष्ट्र के हों अधिकार एक ही है। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग, नस्ल और राष्ट्रीयता व देश के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ, इससे किसी दिन तुम्हारी जंजीरें कट जाएंगी और तुम्हें आर्थिक स्वतंत्रता मिलेगी। आगे उन्होंने लिखा है ''धर्म व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है। इसमें दूसरे का कोई दखल नहीं। न ही इसे राजनीति में घुसाना चाहिए''। यदि धर्म को अलग कर दिया जाए तो राजनीति पर हम सभी इकट्ठे हो सकते हैं। धर्मों में हम चाहे अलग–अलग ही रहें।[15]

8 अप्रैल सन् 1929 को असेम्बली में बम क्यों फेंका

भगत सिंह ने अपने विचार असेम्बली हॉल में फेंका गया पर्चा और बम कांड पर सेशन कोर्ट में ब्यान में बताया है कि '' यह काम हमने किसी व्यक्तिगत स्वार्थ अथवा विद्वेष की भावना से नहीं किया है। हमारा उद्देश्य केवल उस शासन व्यवस्था के विरुद्व प्रतिवाद करना था जिसके हर एक काम से उसकी अयोग्यता ही नहीं वरन अपकार करने की उसकी असीम क्षमता भी प्रकट होती है। इस विषय पर हमने जितना विचार किया उतना ही हमें इस बात का दृढ़ विश्वास होता गया कि वह केवल संसार के सामने भारत की लज्जानक तथा असहाय अवस्था का ढिंढोरा पीटने के लिए ही कायम है और वह एक गैर.जिम्मेदार तथा निरंकुश शासन का प्रतीक है। जनता के प्रतिनिधियों ने कितनी ही बार राष्ट्रीय माँगों को सरकार के सामने रखा, परन्तु उसने उन माँगों की सर्वथा अवहेलना करके हर बार उन्हें रद्दी की टोकरी में डाल दिया। सदन द्वारा पास किए गए गम्भीर प्रस्तावों को भारत की तथाकथित पार्लियामेंट के सामने ही तिरस्कारपूर्वक पैरों तले रौंदा गया हैए दरमनकारी तथा निरंकुश कानूनों को समाप्त करने की माँग करने

वाले प्रस्तावों को हमेशा अवज्ञा की दृष्टि से ही देखा गया है और जनता द्वारा निर्वाचित सदस्यों ने सरकार के जिन कानूनों तथा प्रस्तावों को अवांछित एवं अवैधानिक बताकर रद्द कर दिया थाए उन्हें केवल कलम हिलाकर ही सरकार ने लागू कर लिया है।[16]

बहरों को सुनाने के लिए बहुत ऊँची आवाज की आवश्यकता होती है, प्रसिद्ध फ्रांसीसी अराजकतावादी शहीद वैलियाँ के यह अमर शब्द हमारे काम के औचित्य के साक्षी हैं।हम मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते हैं। हम ऐसे उज्जवल भविष्य में विश्वास रखते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण शान्ति और स्वतन्त्रता का अवसर मिल सके। हम इन्सान का खून बहाने की अपनी विवशता पर दुखी हैं। परन्तु क्रांति द्वारा सबको समान स्वतन्त्रता देने और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त कर देने के लिए क्रांति में कुछ.न.कुछ रक्तपात अनिवार्य है।[17]

मानवता के प्रति हार्दिक सद्भाव तथा अमित प्रेम रखने के कारण उसे व्यर्थ के रक्तपात से बचाने के लिए हमने चेतावनी देने के इस उपाय का सहारा लिया है। और उस आने वाले रक्तपात को हम ही नहींए लाखों आदमी पहले से ही देख रहे हैं।[18]

सरकार ने श्रमिक वर्ग के आंदोलन को कुचलने के लिए केन्द्रीय असेम्बली में दो बिल पेश करने का फैसला किया। पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल पहले बिल में गर्वनर जनरल को अधिकार दिया गया कि वह अंग्रेज का अन्य विदेशी कम्युनिस्ट को भारत से निकाल दें। दूसरे बिल का उद्देश्य मजदूरों के ट्रेड यूनियन अधिकारों की कटौती करना था। असेम्बली में पूरे विरोध पक्ष ने, जनता ने और प्रैस ने दोनों बिलों का जमकर विरोध किया इन दोनों का विरोध करने के लिए असेम्बली हॉल में बम फेंकने का निर्णय किया गया।[19]

यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि इस घटना के सिलसिले में मामूली चोटें खानेवाले व्यक्तियों अथवा असेम्बली के किसी अन्य व्यक्ति के प्रति हमारे दिलों में कोई वैयक्तिक विद्वेष की भावना नहीं थी। इसके विपरीत हम एक बार फिर स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हम मानव.जीवन को अत्यन्त पवित्रा मानते हैं और किसी अन्य व्यक्ति को चोट पहुँचाने के बजाय हम मानव.जाति की सेवा में हंसते.हंसते अपने प्राण विसर्जित कर देंगे। हम साम्राज्यवाद की सेना के भाड़े के सैनिकों जैसे नहीं हैं जिनका काम ही हत्या होता है। हम मानव.जीवन का आदर करते हैं और बराबर उसकी रक्षा का प्रयत्न करते हैं। इसक बाद भी हम स्वीकार करते हैं कि हमने जानबूझकर असेम्बली भवन में बम फेंके।

घटनाएँ स्वयं हमारे अभिप्राय पर प्रकाश डालती हैं। और हमारे इरादों की परख हमारे काम के परिणाम के आधार पर होनी चाहिए न कि अटकल एवं मनगढ़न्त परिस्थितियों के आधार पर। सरकारी विशेषज्ञ की गवाही के विरुद्ध हमे यह कहना है कि असेम्बली भवन में फेंके गये बमों से वहाँ की एक खाली बेंच को ही कुछ नुकसान पहुँचा और लगभग आधे दर्जन लोगों को मामूली.सी खरोंचें.भर आयीं। सरकारी वैज्ञानिकों ने कहा है कि बम बड़े जोरदार थे और उनसे अधिक नुकसान नहीं हुआए इसे एक अनहोनी घटना ही कहना चाहिए। लेकिन हमारे विचार से उन्हें वैज्ञानिक ढंग से बनाया ही ऐसा गया था। पहली बातए दोनों बम बेंचों तथा डेस्कों के बीच की खाली जगह में ही गिरे थे। दूसरेए उनके फूटने की जगह से दो फीट पर बैठे हुए लोगों को भीए जिनमें श्री पीए आरए राउए श्री शंकर राव तथा सर जार्ज शुस्टर के नाम उल्लेखनीय हैंए या तो बिलकुल ही चोंटें नहीं आयी या मात्रा मामूली आयीं। अगर उन बमों में जोरदार पोटेशिमय क्लोरेट और पिक्रिक एसिड भरा होताए जैसा कि सरकारी विशेषज्ञ ने कहा हैए तो इन बमों ने उस लकड़ी के घेरे को तोड़कर कुछ गज की दूरी पर खड़े लोगों तक को उड़ा दिया होता। और यदि उनमें कोई और भी शक्तिशाली विस्फोटक भरा जाता तो निश्चय ही वे असेम्बली के अधिकांश सदस्यों को उड़ा देने में समर्थ होते। यही नहींए यदि हम चाहते तो उन्हें सरकारी कक्ष में फेंक सकते थे जो विशिष्ट व्यक्तियों से खचाखच भरा था। या फिर उस सर जान साइमन को अपना निशाना बना सकते थेए जिसके अभागे कमीशन ने प्रत्येक विचारशील व्यक्ति के दिल में उसकी ओर से गहरी नफरत पैदा कर दी थी और जो उस समय असेम्बली की अध्यक्ष दीर्घा में बैठा था। लेकिन इस तरह का हमारा कोई इरादा नहीं था और उन बमों ने उतना ही काम किया जितने के लिए उन्हें तैयार किया गया था। यदि उससे कोई अनहोनी घटना हुई तो यही कि वे निशाने पर अर्थात निरापद स्थान पर गिरे।[20]

निष्कर्ष

भगत सिंह के जीवन पर उसके परिवार व डी0ए0वी0 कॉलेज के शिक्षक और गदर आंदोलन, अक्तूबर क्रांति, जलियांवाला बाग हत्याकांड, करतार सिंह की फांसी व गांधी जी के आंदोलन के असफलता का गहरा प्रभाव पड़ा उनके अनुसार युवक (नौजवान) क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। व्यक्ति के जीवन गरिमा का वो सम्मान करते थे। क्रांति से उनका अर्थ प्रगति के लिए परिवर्तन था। वे धर्म और राजनीति को अलग–अलग रखना चाहते। वो ऐसी व्यवस्था का विरोध करते थे जिसमें व्यक्ति–2 का शोषण करे। वे आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था में परिवर्तन के पक्षकार थे।

संदर्भ

1 सिंधु, वीरेन्द्र ''भारतीय क्रांति के अग्रदूत, अमर शहीद भगत सिंह'' प्रकाश विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, अप्रैल (1974) पृष्ठ नं0 1 से 5

2 सिंह जगमोहन, लाल चमन ''भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज'' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पटना (1986) पृष्ठ नं0 23, 28

3 सिंधु, विरेन्द्र, पृष्ठ नं0 23 से 28

4 बम कांड पर सेशन कोर्ट में ब्यान (6 जून 1929)

5 सम्पादक, मार्डन रिव्यू के नाम पत्र (22 दिंसम्बर 1929)

6 क्रांतिकारी कार्यक्रम का मसविदा, च्मवचसमेए सैवतम वद श्रनसल वद श्रनसल 29ए 1931 ंदक ।इलनकंलए ।ससींइंक डंल 8ए 1931

7 सिंह, भगत ''जैम ेवतक व ितमअवसनजपवद पे ींतचमदमक वद जीम ीमजजपदह द ेजवदम व पकमें ्रनसंइ ।मम जंसूंत अपबींतवद ाम ंद चंतजमर ीविजप ींपए श्रंदए 1930

8 सिंह, भगत ''साप्ताहिक' मतवाला' खंड–2, नं0 38 तिथि मई 16, 1925

9 सिंह, भगत ''नौजवान भारत सभा, लाहौर का घोषणापत्र (अप्रैल 1928)

10 सिंह, भगत ''विद्यार्थियों के नाम पत्र, ट्रिब्यून, लाहौर, तिथि 22 अक्तूबर, 1929

11 धर्म और हमारा स्वतंत्रता संग्राम

12 सिंह जगमोहन, लाल चमन ''भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज'' पृष्ठ, 47

13 वही पृष्ठ–47

14 साम्प्रदायिक दंगे और उनका इलाज (जून 1928)

15 वही

16 बम कांड पर सेशन कोर्ट में ब्यान

17 असेम्बली हॉल में फेंका गया पर्चा (अप्रैल 1929)
18 बम कांड पर सेशन कोर्ट में ब्यान
19 सिंह जगमोहन, लाल चमन, पृष्ठ–39, 40
20 बम कांड पर सेशन कोर्ट में ब्यान